उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा 'धर्मयुग सर्जना पुरस्कार' से सम्मानित

मूल्य : ₹ 50/-

वर्ष 21 - सितंबर-दिसंबर 2026

# निकट-45

संपादक : कृष्ण बिहारी



# राजेन्द्र राव का रचना संसार

## कहानी-संग्रह










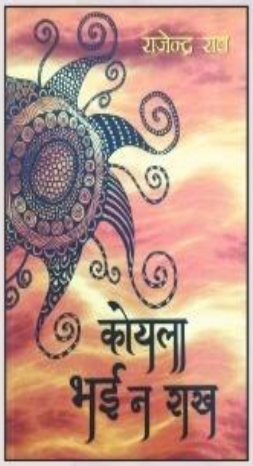




# निकट

**संयुक्त अरब इमारात से शुरू, अब भारत से प्रकाशित**

**कथा प्रधान साहित्यिकी, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा धर्मयुग सर्जना पुरस्कार से सम्मानित**

**वर्ष : 21, अंक-45, सितंबर-दिसंबर 2026**
**Editor: Krishna Bihari**
**HIG-46, B B। ock, Panki**
**Kanpur-208020**
**mobi। e: 6307435896**
**emai। : krishnatbihari@yahoo.com**

**प्रति रुपए 50/-**
**वार्षिक रुपए 500/-**
**तीन वर्ष रुपए 1500/-**
**(डाक खर्च अलग से )**
**भुगतान ऑन लाइन या सीधे बैंक में भी जमा कर सकते हैं :**

**बैंक : बैंक ऑफ बड़ोदा**
**खाता संख्या : 28050100010192**
**खाता धारक : Krishna Behari Tripathi**
**आई एफ एस सी : BARB0SAPRBS**
**बैंक शाखा : सराय मसवानपुर ब्रांच, कानपुर**
**उत्तर प्रदेश**

भारती भाषा संवर्धन संस्थान
द्वारा सहयोग प्राप्त

**6307435896@ybl**

**सर्वाधिकार : सुरक्षित**
निकट से प्रकाशित सामग्री लेने के लिए लेखक और प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से संपादक और प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। किसी प्रकार के विवाद लखनऊ न्यायालय में विचारणीय।
मुद्रक : अमन प्रकाशन, 104-ए / 80-सी, कानपुर, (उ. प्र.) मो.- 9044344050

**निकट पत्रिका से संबन्धित सभी पद अवैतनिक**
**संपादक, स्वामी कृष्ण बिहारी, एच आई जी-46, पनकी बी ब्लॉक, कानपुर-208020 से प्रकाशित।**

निकट

संस्थापक – अशोक कुमार

**संपादक – कृष्ण बिहारी**

**उप संपादक**

धनंजय कुमार सिंह

भूपेन्द्र कुमार सिंह

**सहयोगी**

राधेश्याम यादव

राम नारायण त्रिपाठी

**व्यवस्थापक**

अभिनव त्रिपाठी

**कानूनी सलाहकार**

राजेश तिवारी एडवोकेट

2/241, विजयखंड, गोमती नगर

लखनऊ

**आवरण एवं रेखांकन**

**बंशीलाल परमार**

**अगला अंक निकट – 46**

**जनवरी-अप्रैल 2027**

**ग्राम्य कथा विशेषांक**

**इस अंक में -**

**संपादकीय –**

**संपादकीय - निकट साहित्यिक पत्रिका है, अखाड़ा नहीं** -03

**पिछले अंक पर प्रतिक्रिया - अर्पणा पाण्डेय** -05

एक शिकायत विहीन प्रेम कथा - अनागत पर प्रतिक्रियाएँ

**कहानियाँ :**

**एक खूबसूरत मोड़** - राजेन्द्र राव -13

**आड़े बखत पर** - महेश दर्पण -18

**आगे रास्ता बंद है** - लता शर्मा -21

**किरिच** - डॉ. अमिता दुबे -26

**बना रहा ऊपर ही** - अशोक गुजराती -33

**बहाना सोच लिया है** - विक्रम सिंह -36

**जूतों का डॉक्टर** - डॉ. रंजना जायसवाल -43

**भीड़** - सुरेश हंस -47

**अम्मां** - प्रतिभा मिश्र **-53**

**मुट्ठी भर आसमान** - पूजा गुप्ता -57

**डायरी** - सुनील सक्सेना -62

**अक्षत पत्रिका : एक पठनीय अंक** -61

**लंबी कहानी –**

नो बॉस, नो... - कृष्ण बिहारी -67

**लघुकथाएं –**

आरती आस्था, मनमोहन कौशिक -(20,25,52,96)

**कविताएं-**

यतीन्द्र नाथ राही, वीरेंद्र आस्तिक, -66

सुधांशु कुमार मालवीय, विजय दीक्षित -32,56

**ग़ज़ल** – अनिता सिंह -35

**परिचर्चा** - हिंदी वाचन और पाठन:

विरोधाभासों के बीच हमारी राजभाषा- अचला भूपेन्द्र -82

**पुस्तक समीक्षाएं :**

शहरयार की पुस्तक पर मधु संधु -86

बलराम मट्टनुर की पुस्तक पर कृष्ण बिहारी -87

पारुल तोमर की पुस्तक पर अनुभूति चौहान -88

निर्देश निधि की पुस्तक पर रामेश्वर कंबोज -90

जयराम जय की पुस्तक पर कृष्ण बिहारी -94

रजनी गुप्त की पुस्तक पर अलका प्रमोद -95

संपादकीय

समय से बात – 45



# निकट साहित्यिक पत्रिका है, अखाड़ा नहीं

**यूं** तो इन दिनों फ़ोन से संवाद भी लगभग न के बराबर है। लेखक होने के नाते कोई फ़ोन आए ऐसा भ्रम पालना खुद को तसल्ली देना है। हाँ, एक साहित्यिक पत्रिका का संपादक हूँ इसलिए कभी-कभी कोई फ़ोन ज़रूर आता है। इक्कीस वर्ष से लगातार और समय से प्रकाशित होती आ रही 'निकट' के प्रायः सभी रचनाकार जानते हैं कि मैं उनसे रचनाएँ मांगता हूँ। हर अंक के लिए कुछ रचनाएँ उन रचनाकारों की भी ई मेल से मिलती हैं जिनसे मेरा कोई परिचय नहीं। न तो उनके कृतित्व से और न उनके व्यक्तित्व से। यदि ई मेल से आई किसी रचना में उसके प्रकाशित हो सकने के तत्व दिखते हैं तो मैं उस रचनाकार को फ़ोन अवश्य करता हूँ। उससे बात करता हूँ। मुझे आश्चर्य होता है कि कोई इक्का-दुक्का रचनाकार ही होता है जो सहजता से सुनता और रचना में सुझाए गए कुछ बिन्दुओं पर सुधार के लिए हामी भरता है अन्यथा अधिकांश की स्थिति एवरेस्ट से भी अधिक ऊंचाई पर जड़ होकर बैठे होने की होती है। उसके पास सुनने के लिए समय नहीं होता। रचनाओं की ढेरी होती है। वह कहता/कहती है कि मैं दूसरी भेज देता/देती हूँ। और, अगले ही पल दूसरी या रचनाओं की ढेरी मेल पर आ धमकती है। उदारता और आत्ममुग्धता का भाव यह कि आप कोई भी छांट ले। उनकी दृष्टि में मेरे पास अब सड़ी-गली और दीमकों द्वारा भी छोड़ दी गई रचनाओं में से अपने काम की रचना छांटने के अलावा दूसरा काम तो है नहीं।

दूसरी प्रजाति अपनी रचना के साथ परिचय ज़रूर संलग्न करती है। उनके संक्षिप्त परिचय का संसार इतना व्यापक है कि जन्म से मृत्यु न होने तक के उनके सभी सुकृत्य क्रम से उल्लिखित होते हैं। कोई ऐसी विधा नहीं जिसमें उन्होंने गगन न छुआ हो। कोई ऐसी पत्रिका नहीं जिसने उन्हें ससम्मान न छापा हो। कोई साझा संकलन नहीं जो उनके बिना शामिल हुए प्रकाशित हुआ हो। कोई ऐसा पुरस्कार नहीं जो उन्हें न मिला हो। अगर अब तक कुछ नहीं मिला है तो 'निकट' में न छप पाने की संपादकीय नासमझी और छपकर अपना झण्डा गाड़ने का बहु प्रतीक्षित सुख।

बहुत विस्तृत और असीमित परिचय के साथ अपने अगणित सुकृत्यों का विवरण किसी पुरस्कार प्राप्ति की लालसापूर्ण वासना के लिए तो सही है। आपको अपना परिचय देना है। आप दें। अपने सभी सुकृत्य लिखने के अधिकारी हैं, लिखें। क्योंकि कुकृत्य तो आप लिखेंगे नहीं। आपने किया ही नहीं, तो कैसे लिखेंगे। इसलिए वह आपकी रचना में भी नहीं मिलता और परिचय में भी। आपके विशद प्रकाशन संग्रहालय को देखकर मुझे चिंता होती है कि परिवार के सभी सदस्यों की नापसंद के बाद इतनी महत्त्वपूर्ण सामग्री को आप अपने घर के कितने कमरों में रखते होंगे ! निकट में रचना ही रचनाकार का परिचय है। रचनाकार का मोबाइल नंबर दिया जाता है। जिसे रचनाकार का परिचय जानने की इच्छा होगी वह फ़ोन करके जान लेगा।

जो संपादक इनकी रचना प्रकाशित कर दे वह आदरणीय, प्रातः वंदनीय, और, वह पत्रिका या अख़बार सर्वश्रेष्ठ, प्रतिष्ठित और सर्वोत्कृष्ट ; यदि न छापे तो निकृष्ट। ऐसे सभी रचनाकारों से बिना उलझे मैं हमेशा के लिए दूर हो जाता हूँ। निकृष्ट और नासमझ कहा जाना मुझे मंजूर है पर आए दिन उनसे मल्ल युद्ध के लिए तैयार होने की कोई कसरत मैं नहीं करता।

तीसरी प्रजाति आभासी दुनिया की है। फेस बुक पर मेरी फ्रेंड लिस्ट बहुत छोटी है। इसके बावजूद अपरिचितों की फ्रेंड रिक्वेस्ट गाहे-बगाहे आती है। इन्हें मेरा पता उन रचनाकारों से मिलता है जिनकी रचनाएँ 'निकट' में छपती हैं। वे रचना छपने की सूचना अपनी वाल पर देते हैं। आजकल हर कोई करता है। मैं भी। यह जानते हुए कि इन सूचनाओं से कुछ होने वाला नहीं। बमुश्किल इक्का-दुक्का लोग आपको पढ़ते हैं, पढ़ेंगे। उस लंबी लिस्ट में निन्यानबे प्रतिशत को न आपसे मतलब है न आपकी रचना से। उनको सिर्फ़ लाइक करना है या फिर वाह-वाह। बिना पढ़े कि आपने सुखद सूचना दी है या दुखद। उन्हें, और सूचना देने वाले को भी पता है कि इन दिनों किसी में पढ़ने की रुचि शेष नहीं है। हाँ, पत्रिका या अख़बार का नाम-पता उन्हें मिल जाता है। फिर उनका काम पत्रिका के संपादक को फ्रेंड रिक्वेस्ट और रचनाओं की ढेरी भेजने का होता है। अगर संपादक जानना चाहे कि ये महोदय/महोदया कौन हैं तो, उनकी टाइम लाइन लॉक्ड मिलेगी या फिर अभिव्यक्ति की अ-गहन बारीकियों की कीमियागिरी से ओत-प्रोत। ऐसे में उनकी रिक्वेस्ट को डिलीट करने के सिवाय दूसरा कोई चारा मुझे नहीं दिखता। मानसिक कुश्ती मुझसे लड़ी नहीं जाती।

सबसे खतरनाक चौथी प्रजाति है। यद्यपि इनकी संख्या कम है फिर भी आंदोलनजीवी नामक यह प्रजाति हर शहर और पूरे देश में है। बड़ी खुर्राट है। इनका काम विध्वंस है। इन्हें कुछ रचना नहीं है बल्कि रचे हुए को नष्ट करना है। चूंकि, इनकी दाल कहीं गलती नहीं इसलिए ये उसे हर जगह गलाने की कोशिश में लगे रहते हैं। इनके फ़ोन भी बीच-बीच में आते हैं। इनकी भाषा की बानगी देखें –

1- आप अपनी पत्रिका में बहस चलाएं, विवाद उत्पन्न करें, कुछ ऐसा करें कि समाज में पत्रिका की चर्चा हो ---

2- देखिये, यह भी कोई बात हुई कि योगी बुलडोजर चलाएं और किसी समुदाय के लोगों के घर तोड़ दें, लिखिए इसके खिलाफ।

3- पत्रिकाएँ दलबंदी किए हुए हैं, अपने दल के लोगों को ही जगह देती हैं, ये पत्रिकाएँ क्या पत्रिका कहलाने योग्य हैं ? इनकी कलई खोलिए।

**अ**ब इन्हें कौन बताए कि 'निकट' में बहस क्यों चलाऊँ ? इनको अच्छी तरह पता है कि इनकी भूखी पीढ़ी, नंगी पीढ़ी के सभी आंदोलन सूखी नदी में न केवल बह गए बल्कि इनकी झंडाबरदार पीढ़ी को भी बहा ले गए ! दिन भर चैनलों पर बहस चलती है। एक-दूसरे की ले-दे होती है। अन्य माध्यमों से भी बहसनुमा खिलवाड़ जारी है। इन सबसे आपका मन नहीं भरता ? बहस से कौन-से मसले हल हुए हैं?

योगी बुलडोजर चला रहे हैं तो उन्हें मना करने योगी के पास जाओ, मुझसे कहने से क्या होगा, क्या मैं सुपर सी एम हूँ। और हाँ, तुमको केवल विशेष समुदाय ही दिखता है ? दिन में ही इतनी रतौंधी आँखों को पूरी तरह खराब कर देगी।

पत्रिकाएं दलबंदी किए हैं तो तुम उनसे मुठभेड़ करो न ! तुम कोई पत्रिका क्यों नहीं निकालते ? तुम जैसों का भी एक दल है न ! निकालो और नई दलबंदी करो। देखो कि तुम्हें चार कंधे भी मिलते हैं। एक अंक निकालने में ही टें और चें बोल जाओगे। अपने निंदा अभियान को ढोते जिए जाओ। यही तुम्हारी नियति है। इसी में तुम्हारी गति है।

अखाड़ची भाइयो और बहनो, निकट एक साहित्यिक पत्रिका है, अखाड़ा नहीं।

**समय से बात – सहस्त्र नाम तत्तुल्यम् रामनाम वरानने**

**अ**योध्या चर्चा में है। राम-मंदिर में गिरोह बनाकर सुनियोजित चोरी हुई है। इस चोरी से भारतीय मानस को चोट पहुंची है। चोरी कितने की हुई है, यह महत्त्वपूर्ण नहीं है। एक पैसे की हो या कुबेर के खजाने की ; चोरी, चोरी है। मैं इसे पाप-पुण्य के पैमाने पर नहीं देखता। जिसने दान दिया, उसने पुण्य का काम किया या जिसने चोरी करके पाप कृत्य किया यह बहस का मुद्दा नहीं हो सकता। यह अपराध है और इसकी सज़ा होनी चाहिए। शायद ही कोई होगा जो सज़ा की मांग न करे। यह मांग कानून से है मगर इस देश में एक गया-गुजरा विपक्ष है। उसकी मांग जनता-जनार्दन से है। विपक्ष चाहता है कि जनता सरकार बदल दे और उनको उस कुरसी पर बिठा दे जिसकी टांगें उन्होंने टांग रखी है। विपक्ष को हिन्दू वोट चाहिए। उसे पता चल गया है कि समुदाय विशेष और एक जाति विशेष का मिलाजुला समीकरण अब किसी काम का नहीं। उसकी सामूहिक कोशिश है कि हिन्दू समाज को भड़का दो। उसे अपने ही खिलाफ कर दो। एक बार फिर कोढ़ में खाज लिए विपक्ष अपना सिर धुनेगा जब उसे अपनी चाल के विफल होने का परिणाम मिलेगा। चोरी कहाँ नहीं हो रही? अधम और नीच हर क्षेत्र में हैं। पानी,बिजली,पेट्रोल,राजस्व की चोरी क्या नहीं हो रही ? इन चोरियों से क्या सामाजिक आस्था को चोट नहीं पहुँचती ? केवल राम मंदिर में हुई चोरी ही आस्था पर कुठाराघात है ? कफ़न तक चुरा लेने वाले गिरोहों की नई विकसित आस्था ने जिस कुरसी की ओर गिद्ध दृष्टि जमा रखी है उससे कोई परिवर्तन होगा, यह उनका दिवा स्वप्न ही है।

मैं अब मंदिर नहीं जाता। पूजा-पाठ नहीं करता। यह मेरे लिए प्रगतिशील होने का कवच नहीं है। पहले मंदिर जाता था। अब मुझे भेड़ियाधसान भीड़ अच्छी नहीं लगती। पूजा-पाठ करने से किसी को मना नहीं करता। प्रसाद ले लेता हूँ। नास्तिक नहीं हूँ। एकांत में मौन प्रार्थना करता हूँ। ईश्वर ने जो दिया है उसके प्रति कृतज्ञता अर्पित करता हूँ। सर्वे भवन्तु सुखिनः के अलावा और कुछ नहीं मांगता। राम तो मुझे विरासत में मिले हैं। उन पर अडिग आस्था है। चंद चिन्दीचोरों के कुकृत्य से मेरी और दुनिया भर में फैली हिन्दू आस्था पर कोई फर्क नहीं पड़ता।

युद्ध का समाधान युद्ध नहीं है। झगड़े कभी खत्म नहीं होते। पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते रहते हैं। युद्ध से किसको लाभ होता है, यह मैं नहीं जानता लेकिन इतना ज़रूर जानता हूँ कि युद्ध का खामियाजा निर्दोष जनता भुगतती है। चार महीने से अधिक का समय बीत गया लेकिन पश्चिम एशिया में स्थिति वहीं की वहीं है। वक़्त कठिन है मगर गुज़र जाएगा। इस उम्मीद के साथ नव-वर्ष की शुभ कामनाएँ।

निकट-46 जनवरी-अप्रैल 2027 ग्राम्य कथा विशेषांक होगा।



# निकट-44 : एक प्रतिक्रिया

कहानी हिंदी साहित्य की सदैव से केंद्रीय विधा रही है। 'निकट' का प्रत्येक अंक समकालीन हिन्दी कहानी का एक जीवंत दस्तावेज की तरह होता है। अंक-44 में भी हिंदी कहानी के इस समकालीन स्वरूप को बखूबी देखा जा सकता है। इस अंक में तेरह वरिष्ठ कथाकारों की कहानियां हैं। कुछ कहानियों की चर्चा करना यहां जरूरी लगा।

नवनीत मिश्र की कहानी 'बिना छत का मकान' एक ऐसी कहानी है जिसमें दो प्रेमी शादी के पहले ही अपने लिए आशियाना बनाने की सोचते हैं ताकि परिवार संरक्षण न दे तो भी यहाँ रह सकें। प्रेमिका कहती है कि इस शादी से घर में तूफान खड़ा होगा और मैं उस तूफान का सामना करने के लिए अपने को तैयार कर रही हूं। मैंने एक जमीन खरीदी है और मज़ाक मज़ाक में तय हुआ कि इस घर की नींव और दीवार मैं खड़ी करूंगी और छत वह ढलवाएगा। छत के नीचे ही तो घर होता है। यह घर उनका होने ही वाला था और वे शादी के बाद यही रहने वाले थे। मेरे मम्मी- पापा मुझे विदा करते उससे पहले ही मैंने उनसे विदा ले ली। चुपचाप उन्हें बताए बिना। दीवारें खड़ी करने का मेरा काम पूरा हो चुका था। तभी उसने एक दिन मुझसे कहा कि मैं जल्दी ही अपने ममी-पापा से बात करूँ शादी के लिए नहीं तो मैं अपने आप को अपने घर की मर्जी के हवाले कर दूँगा। इधर मेरे पापा को दिल का दौरा पड़ा था। इसलिए मैं उन्हें आघात नहीं देना चाहती थी। स्थितियां ऐसी बनी कि मकान बिना छत्त के ही रह गया।

' ये दरिया है प्रेम का ' उर्मिला शिरीष की एक ऐसी कहानी है जिसमें पुत्र द्वारा पिता की संपति जो दादी- दादा द्वारा बनाई गई है, में पुत्र का हस्तक्षेप पिता को अच्छा नहीं लगता है। फिर पिता द्वारा अलग से जमीन खरीद कर उस पर 75 फ्लैट बनवाये जाते हैं। तैयार होने के बाद वे फ्लैट भेंट करने के लिए मां का जन्मदिन चुनते हैं। शशिधर अपनी पत्नी को साथ लेकर अपने काम करने वाले सदस्यों को भी परिवार की तरह सामने रखते हुए ये फ्लैट अपने स्टाफ के 75 लोगों को सौंपते है। इन लोगों ने मेरे बिजनेस को आगे बढ़ाने में अपना जीवन समर्पित किया है। इन फ्लैट को महिलाओं के नाम कर रहा हूं जिनका कहने को कोई घर नहीं होता है।

सुषमा मुनीद्र की कहानी ' विशुद्ध ' भी ऐसी ही एक कहानी है जो बहुत कुछ सोचने को विवश करती है।

अन्य कहानियाँ भी हमें समाज के उस वैचारिक धरातल पर ले जाती हैं जिन्हें हम प्रतिदिन अपने आस- पास देखते हैं।

इस अंक के गीत, ग़ज़ल और व्यंग्य अत्यंत पठनीय होने के कारण इसे एक संपूर्णता प्रदान करते हैं।

अर्पणा पाण्डेय
मो- 9455225325

# अनागत (कहानी) पर आई प्रतिक्रियाएँ

**‘एक शिकायत विहीन प्रेम कथा – अनागत’ पर प्रतिक्रियाएँ**

## स्व को प्रिय में विलीन करना ही प्रेम है

**क**भी-कभी कोई कहानी ज़िंदगी की तरह लगती है और कभी-कभी ज़िंदगी ही कहानी की तरह हो जाती है। कुछ लेखक ऐसे ही जादूगर होते हैं, जो शब्दों में रमकर रचते हैं यथार्थ और कल्पना के समानांतर एक अनूठा भावलोक, जो हमारे दिल-दिमाग पर छा जाता है। प्रेम ऐसा ही भाव है, ज़िंदगी से कहीं बहुत आगे तक...

आधे से ज़्यादा साहित्य प्रेम कहानियों से भरा पड़ा है। कोई मायने नहीं रखता कि लिखी हुई कहानी में कितना सच है और कितना झूठ, लेकिन जब आप जान जाते हैं कि आपके लिखे एक-एक शब्द न जाने कितने पाठकों के बीच से गुज़रने वाले हैं, तब लिखने वाला ज़्यादा चौकन्ना, ज़्यादा सजग हो जाता है। इस कहानी में लेखक ने शब्दों के सेतु बाँधकर पीड़ा और आनंद की जो डोर पाठकों के हाथ में थमाई, तो कहानी खत्म होने तक पाठकों के जेहन में बस दो ही लोग अटके रहे - पहला नायक और दूसरी नायिका।

आत्मकथात्मक शैली में लिखी यह कहानी 'अनागत - एक शिकायत-विहीन प्रेम कथा' आम प्रेम कहानी जैसी नहीं है। जैसे हम खुली खिड़की से आसमाँ को निहारा करते हैं, बिल्कुल ऐसी ही है। समय और समाज के बारे में लिखने-पढ़ने वालों की जमात में यह प्रयोग स्वागत योग्य है। लेखक ने लिखते समय पूरी कोशिश की है कि एक भी शब्द गैर-ज़रूरी न हो।